राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का संबोधन

दिनांक 28 फरवरी 2024, बुधवार	**समय : 12 Noon**	**स्थान : खानापाड़ा, गुवाहाटी**

- असम सरकार के विज्ञान, प्रोद्योगिकी एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के माननीय मंत्री श्री केशव महंत जी,
- विभाग की सचिव श्रीमती लया मादुरी जी,
- ए.एस.टी.ई.सी. के निदेशक डॉ. जयदीप बरुवा जी,
- इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी इन साइंस एंड टेक्नोलॉजी की पूर्व निदेशक डॉ. जयंती सुतिया जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- देवियों और सज्जनों,

नमस्कार !

सर्वप्रथम देश के महान वैज्ञानिक सर सी.वी. रमन को मेरा शत्-शत् नमन।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के अवसर पर हमारे वैज्ञानिक समुदाय के योगदान और समर्पण की सराहना करने के इस राज्य स्तरीय समारोह में आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे बहुत गर्व हो रहा है। मुझे यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं असम सरकार और असम विज्ञान प्रोद्योगिकी एवं पर्यावरण परिषद (ASTEC) को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। साथ ही मैं कार्यक्रम की सफलता के लिए शुभकामनाएं देता हूं।

देवियो और सज्जनो,

हम सभी जानते हैं कि 28 फरवरी को हर वर्ष हम भारतीय भौतिक विज्ञानी सर सी.वी. रमन द्वारा रमन प्रभाव (Raman Effect) की खोज के स्मरण के रूप में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है। लेकिन यह दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य युवाओं में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाना, वैज्ञानिक अनुसंधान एवं शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देना तथा समाज में विज्ञान के प्रति जागरूकता लाना है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का महत्त्व भारत की वैश्विक वैज्ञानिक महाशक्ति बनने की यात्रा को दर्शाता है। अतीत का सम्मान करके, वर्तमान का उत्सव मनाकर और भविष्य की कल्पना करके, यह भारत की वैज्ञानिक प्रगति को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

यह एक ऐसा अवसर है, जो लोगों को एक बेहतर कल के लिए विज्ञान और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में खोज एवं नवाचार कर एक विकासशील राष्ट्र का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

विज्ञान के क्षेत्र में नित्य नए प्रयोग हो रहे हैं। भारत भी इसमें पीछे नहीं है। वैज्ञानिक अनुसंधान में भारत की प्रगति को विश्व स्तर पर स्वीकार किया गया है। देश ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (जीआईआई) में पर्याप्त प्रगति कर रहा है। 90,000 से अधिक पेटेंट फाइलिंग के साथ भारत अपने वैज्ञानिक पारिस्थितिकी तंत्र में पुनरुत्थान देख रहा है, जो देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

हाल के वर्षों में भारत ने विज्ञान और टेकनोलॉजी के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर **चंद्रयान-3** की सफल लैंडिंग और कोविड-19 महामारी के दौरान भारत की मजबूत वैक्सीन विकास क्षमता उल्लेखनीय उपलब्धि हैं। और अब हमारे **आदित्य एल-1** ने सूर्य के करीब पहुंचकर अंतरिक्ष में नया इतिहास रच दिया है। मानव कल्याण के लिए भारत खगोल विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान, जैव प्रौद्योगिकी, नवीकरणीय ऊर्जा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदर्शी सोच और नेतृत्व में भारत विज्ञान, तकनीक और प्रोद्योगिकी के क्षेत्र में नई सफलताएं हासिल कर रहा है। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए सरकार ने नवाचार, उद्यमिता और स्टार्टअप को बढ़ावा दिया है।

विज्ञान के माध्यम से भी देश को आत्मनिर्भर बनाने पर जोर दिया जा रहा है। इसलिए मैं समता हूं कि इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का थीम **"विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रोद्योगिकियां"** रखा गया है।

वास्तव में इस दिवस का लक्ष्य आत्मनिर्भर और विकसित भारत के लिए स्वदेशी टेक्नोलॉजी के उपयोग और विकास को बढ़ावा देना है। यह भारतीय वैज्ञानिकों को नवाचार के लिए प्रोत्साहित करने के रणनीतिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि शोध और कौशल विकास कार्यों में रणनीतिक निवेश के माध्यम से यह पहल राष्ट्र के समावेशी विकास में उत्प्रेरक का काम करेगा। हम स्वदेशी प्रोद्योगिकी को प्राथमिकता देकर विदेशी आयात पर अपनी निर्भरता को कम कर सकते हैं। इससे रोजगार के नए अवसर भी पैदा होंगे।

भारत के वैज्ञानिक खोजों और सफलताओं का एक अच्छा इतिहास रहा है। देश की स्वदेशी तकनीकों और प्रोद्योगिकियों का दुनिया ने लोहा माना है। भारतीय नौसेना का गौरव **आईएनएस विक्रांत** देश का पहला स्वदेशी रूप से विकसित विमान वाहक है। इसके अलावा रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) ने कई वैमानिक प्रणालियाँ, मिसाइलें और इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकियाँ विकसित की हैं।

कोवैक्सिन भारत का पहला स्वदेशी रूप से विकसित कोविड-19 वैक्सीन है, जिससे न सिर्फ देश में, बल्कि विदेशों में भी कोरोना वायरस से लोगों को राहत दिलाने में मदद मिली।

कॉर्बेवैक्स भी कोविड 19 के खिलाफ भारत का पहला स्वदेशी रूप से विकसित रिसेप्टर-बाइंडिंग डोमेन (आरबीडी) प्रोटीन सबयूनिट वैक्सीन है।

भारतीय दवा निर्माता कंपनी जायडस कैडिला द्वारा निर्मित **ZyCOV-D** दुनिया की पहली डीएनए वैक्सीन है। इसी तरह **(सर्वावैक) CERVAVAC** सर्वाइकल कैंसर के इलाज के लिए भारत का पहला स्वदेशी रूप से विकसित टीकाकरण है।

ऐसे कई और उद्हारण हैं, जो भारत के वैज्ञानिकों के ज्ञान एव बुद्धिमता और स्वदेशी प्रद्योगिकी की क्षमता को प्रमाणित करता है। हमें अपने वैज्ञानिकों पर गर्व है।

देवियो और सज्जनो,

सरकार ने वैज्ञानिक अनुसंधान, इसके विकास, नवाचारों और मानव जीवन में इनकी उपयोगिता को बढ़ावा देने के लिए कई पहल शुरू की हैं। सरकार ने बुनियादी अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए **मेगा सुविधा स्कीम**, शिक्षण संस्थानों मे शोध और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए **फिस्ट, सैफ्स, पर्स,** युवाओं को विज्ञान के क्षेत्र में कैरियर बनाने तथा युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिए **इंस्पायर-मानक, इंस्पायर योजना** और **किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना** चला रही है।

विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा **वाइज-किरण** नामक योजना भी शुरू की गई है। इसके अलावा प्रोद्योगिकी विकास, सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए विज्ञान और टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देने के लिए सरकार कई याजनाएं चला रही है।

21वीं सदी में विकसित भारत बनाने के लिए इन प्रयासों को जारी रखना आवश्यक है। इसके लिए सरकार के साथ-साथ हम सभी को मिलकर काम करना होगा।

देवियो और सज्जनो,

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के उद्देश्य को सफल बनाने के लिए जनमानस के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने और युवाओं को वैज्ञानिक खोजों की ओर प्रेरित करना होगा। शैक्षणिक संस्थान इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मैं शैक्षणिक संस्थानों से आग्रह करता हूं कि वे विज्ञान प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों आदि के आयोजन पर अधिक जोर दे।

हमें, समाज में वैज्ञानिक संस्कृति के विकास को महत्त्व देने वाली शैक्षिक प्रणाली की आवश्यकता है। हमारे प्राचीन विश्वविद्यालय, चाहे नालंदा हो या तक्षशिला, मूल्य आधारित सर्वांगीण शिक्षा पर केन्द्रित थे।

मैं वैज्ञानिक समुदाय का आह्वान करना चाहूंगा कि वह हमारे भविष्य को संवारने के लिए, एक ऐसी वैज्ञानिक संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कार्य करें जिसमें शांति, उत्कृष्टता और समता तथा प्राचीन एवं मानवीय मूल्यों का संगम हो।

भारत को अगले 25 वर्ष में नई ऊंचाइयां हासिल करनी है और इस कार्य में देश के वैज्ञानिक समुदाय को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

देवियो एवं सज्जनो,

मुझे खुशी है कि माननीय मुख्यमंत्री श्री हिमंत विश्व शर्मा जी के नेतृत्व में असम सरकार असम विज्ञान प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद (एएसटीईसी) के माध्यम से राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन कर रही है।

असम से बड़ी संख्या में असम के वैज्ञानिक असम और देश के विभिन्न संस्थानों, अनुसंधान एवं प्रतिष्ठानों और प्रयोगशालाओं में विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विषयों पर काम कर रहे हैं। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि असम सरकार ने इन वैज्ञानिकों और नवप्रवर्तकों के उत्कृष्ट योगदान की सराहना करने के लिए उन्हें सम्मानित करने की पहल की है।

मुझे बताया गया है कि असम सरकार राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पर वैज्ञानिक उत्कृष्टता के लिए 2 (दो) व्यक्तियों और 1 (एक) संगठन/संस्था को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार में राज्य विज्ञान पुरस्कार प्रदान कर रही है। इसके अलावा पर्यावरण संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान के लिए भी पांच विशिष्ट लोगों को परिवेश मित्र सम्मान से पुरस्कृत किया जा रहा है।

मैं पुरस्कार पाने वाले आप सभी लोगों एवं संस्थानों को बधाई देता हूं। आशा करता हूं कि आप मानव कल्याण के लिए विज्ञान और प्रोद्योगिकी तथा पर्यावरण के क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान देना जारी रखेंगे।

सरकार के ऐसे प्रयासों से निःसंदेह हमारे वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित तथा युवा पीढ़ी को वैज्ञानिक प्रगति में योगदान करने तथा विज्ञान के माध्यम से वैश्विक चुनोतियों का समाधान करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। इससे हमारे राष्ट्र का वैज्ञानिक आधार भी मजबूत होगा। मैं इस पहल के लिए राज्य सरकार को हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

अंत में पुनः आप सभी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की बधाई एवं समारोह की सफलता के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

जय हिन्द।